13 महाप्रस्थान

नरेश मेहता

(जन्मः सन् 1922 ई. : निधन : सन् 2000 ई.)

आधुनिक हिन्दी कवि नरेश मेहता का जन्म मध्यप्रदेश के शाजापुर में हुआ था। उनकी माता सुंदरबाई और पिता का नाम बिहारीलाल था। उनका मूल नाम पूर्णशंकर था। नरसिंहगढ़ में सन् 1940 में सातवीं कक्षा की पढ़ाई के समय वहाँ की राजमाता ने सुंदर काव्य पढ़ने पर पूर्णशंकर को 'नरेश' उपनाम दिया। उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से हिन्दी में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने कुछ वर्षों तक ऑल इंडिया रेडियो में सेवाएँ दीं।

नरेश मेहता के कविता संग्रहों में 'बनपाखी! सुनों!', 'बोलने दो चीड़ को', 'मेरा समर्पित एकांत', 'उत्सवा', 'तुम मेरा मौन हो', 'अरण्या', 'आखिर समुद्र से तात्पर्य', 'पिछले दिनों नंगे पैरों', 'देखना एक दिन', 'चैत्या' मुख्य है। खण्डकाव्य 'संशय की एक रात', 'महाप्रस्थान', 'प्रवादपर्व', 'शबरी' और 'प्रार्थना पुरुष' प्रमुख हैं। उपन्यास, निबंध, कहानी, नाटक, एकांकी, यात्रावृत्तांत और अनुवाद जैसी गद्य विद्याओं पर भी कवि ने कलम चलायी है। कवि को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार (1992) साहित्य अकादमी पुरस्कार, मंगलाप्रसाद पारितोषिक, भारत भारती सम्मान से सम्मानित किया गया है।

'महाप्रस्थान' खण्डकाव्य का विषय पाण्डवों का स्वर्गारोहण है, जिसमें युधिष्ठिर के माध्यम से कवि ने राज्य-व्यवस्था की अखूट शक्ति से उत्पन्न संकट और उसके व्यक्तित्व की रक्षा, जैसे प्रश्न उठाए हैं, जो चिरंतन हैं।

युधिष्ठिरः प्रश्न और जिज्ञासा में
अन्तर समझते हो पार्थ?
सत्य की प्राप्ति
दूसरे से प्रश्न करके नहीं होती,
स्वयं से ही जिज्ञासा करनी होती है।
सुख या दुख के स्थान पर
मुझे सदा जिज्ञासा हुई पार्थ!
मेरे राज्य-परित्याग से
अवश्य ही तुम लोगों को बुरा लगा होगा।
मैंने मात्र शास्त्र-व्यवस्था के कारण ही
वानप्रस्थ नहीं स्वीकारा
परन्तु
यह मेरी वैचारिकता का निष्कर्ष था बन्धु!

अर्जुन : कैसा निष्कर्ष!

युधिष्ठिरः वस्तुओं से हीन होते जाने का अर्थ है
व्यक्तित्व से सम्पन्न होते जाना।
युद्ध, राज्य, साम्राज्य, सम्पदा, सम्बन्ध
इन सबकी सीमाएँ हैं पार्थ!
ये ही
वे कुचक्र हैं

जिन्हें व्यक्ति
अपने चारों ओर बुन लेता है
और फिर कभी
इस सफलता की सुगन्ध के परिवृत्त से
बाहर आना नहीं चाहता।
ये वस्तुएँ
ये सफलताएँ
एक दिन उसका पर्याय बन जाती हैं।
वस्तुओं और सफलताओं के माध्यम से
अमरता प्राप्त करने को ही तो
तुम पुरुषार्थ और संकल्प कहते हो?

ये दुर्ग, प्रासाद, स्मृति-भवन
चारण-प्रशस्तियाँ
ये झूठे इतिहास वाले शिलालेख
व्यक्ति को अमरता देंगे?
पार्थ!
जड़, जड़ का ही प्रतिनिधित्व कर सकता है
चेतन का नहीं।
तुम्हें बारम्बार कचोटती है
अपनी विवशता कि -
तुम अपमानित किये गये
तुम्हारे स्वत्व का हनन किया गया
न्याय-प्राप्ति के लिए
तुम्हें संघर्ष करना पड़ा,
पर पार्थ!

कभी उन
विचारहारा साधारण जनों के बारे में सोचो -
जो सदा अपमानित होते रहे हैं।
जिनके स्वत्व का अपहरण ही
हमारे ये दीप्तित साम्राज्य हैं।
अन्याय के अभ्यस्त वे
नहीं जानते कि
न्याय भी कुछ होता है।
प्रत्येक युद्ध -

जिसमें से एक राज्य जन्म लेता है,
कितनी स्त्रियों को विधवा
और बच्चों को अनाथ कर जाता है।
और वे जीवन-संघर्ष में
दिशाहीन खो जाने के लिए
बाध्य हो जाते हैं,
सव्यसाची!
तुम्हारे कृष्ण ने ही तो कहा था -
युद्ध के उपरान्त
समाज में वर्णसंकरता बढ़ जाती है।
कर सकते हो
उस दिन की कल्पना
जब इस पृथ्वी पर
कुलगोत्र-हीन वर्ण-संकरता ही विचरण करेगी?
उस दिन
इस ऐतिहासिक कुण्ठता का
कौन उत्तरदायी होगा अर्जुन!
कौन उत्तरदायी होगा?

आज, नहीं तो कल
राजा से अधिक कठोर हो जाएँगे
ये राज्य -
और सुदूर भविष्य में
राज्य से भी अधिक अमानवीय हो जाएँगी
ये राज्य-व्यवस्थाएँ।
इनके दो आधार-स्तम्भों-
युद्ध और आतंक
जिनका शिलान्यास
मनुष्य की आदिम प्रवृत्तियाँ
बारम्बार करती आयी हैं
एक दिन
युद्ध और आतंक ही
सामाजिकता के पर्याय बन जाएँगे
युद्ध में हमने कौरवों को हराया
और आतंक के बल पर
तुमने

पाण्डव-साम्राज्य का राजकोष बढ़ाया।
पार्थ!
हमारे इन अमानवीय कृत्यों के
ये ही तो ऐतिहासिक निष्कर्ष निकले कि -
अर्जुन से श्रेष्ठ कोई योद्धा नहीं
और युधिष्ठिर ही
एक मात्र चक्रवर्ती सम्राट हैं!!
मानवता का यह रथ
किस अंधे मार्ग पर बढ़ रहा है
तुम नहीं जानते पार्थ!
तुम नहीं जानते कि
संकट कहीं अधिक गहरा है।

शब्दार्थ और टिप्पणी

वानप्रस्थ मनुष्य जीवन के चार आश्रमों (विद्यार्थी, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास) में से एक **कुचक्र** षडयंत्र, छल-प्रपंच, चाल, साजिश **परिवृत्त** घेरा **दुर्ग** किला **प्रासाद** राजभवन, विशाल भवन **स्मृति-भवन** किसी की स्मृति में बनवाया गया भवन **चारण-प्रशास्तियाँ** चारणों (भाटों) द्वारा की गई प्रशंसाएँ **कचोटता** चुभाना, अंदर-अंदर दुख देना **विचारहारा** जिनकी विचार-शक्ति छीन ली गई हो, जिसे विचार करने के लायक न छोड़ा गया हो **सव्यसाची** अर्जुन का एक नाम, अर्जुन दोनों हाथों से बाण चला सकते थे, इसलिए यह नाम पड़ा **वर्ण-संकरता** दो भिन्न जातियों के स्त्री-पुरुष द्वारा संतानों के पैदा होने की स्थिति **शिलान्यास** नींव डालना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उनके नीचे दिए गए विकल्पों से सही विकल्प चुनकर लिखिए :

(1) युधिष्ठिर ने मात्र शास्त्र-व्यवस्था के कारण ही क्या नहीं स्वीकारा?
(क) वानप्रस्थ (ख) गृहस्थ (ग) संन्यास (घ) वृद्धत्व

(2) निम्न में से किसकी सीमाएँ निश्चित हैं?
(क) युद्ध की (ख) साम्राज्य की (ग) सम्बन्ध की (घ) सभी की

(3) दुर्ग, प्रासाद, और स्मृतिभवन में किसकी प्रशस्तियाँ गूँजती रहती हैं?
(क) विचारहारा की (ख) चारण की (ग) सज्जन की (घ) एक भी नहीं

(4) युद्ध और आतंक किसके पर्याय हैं?
(क) वितृष्णा के (ख) आतंक के (ग) सामाजिकता के (घ) मानसकिता के

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) आर्य शास्त्रव्यवस्था में मनुष्य जीवन के कितने आश्रम बताये गए हैं?
(2) शिलालेख पर क्या लिखा जाता है?
(3) जड़ किसका प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता?
(4) श्रेष्ठ योद्धा के रूप में कौन जाना जाता है?

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में लिखिए :**

(1) सत्य की प्राप्ति के बारे में युधिष्ठिर के विचार बताइए।

(2) युधिष्ठिर ने वस्तुओं से हीन होने का क्या अर्थ बताया है?

(3) युधिष्ठिर के मतानुसार अमानवीय कृत्यों का ऐतिहासिक निष्कर्ष क्या निकलेगा?

4. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छ पंक्तियों में लिखिए :**

(1) सफलता और अमरत्व के बारे में युधिष्ठिर के विचार सविस्तार बताइए।

(2) युद्ध के परिणाम से जन्म लेनेवाली स्थिति पर अपने विचार स्पष्ट करें।

(3) ''जड़, जड़ का ही प्रतिनिधित्व कर सकता है चेतन का नहीं'' - विमर्श समझाइए ।

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्तिः नरेश मेहता रचित 'संशय की एक रात' नाटक को पढ़ें।

(2) शिक्षण प्रवृत्तिः महाभारत की कथा छात्रों को सुनाइए।